Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 21, Issue No. 3, April-2024, ISSN 2230-7540

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का इतिहास और विचार

सचिन राठौड़*

शोधार्थी छात्र, समाजशास्त्र विभाग, डीएवी कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

Email: sunny14071980@gmail.com

अमूर्त - भीमराव रामजी अम्बेडकर एक भारतीय बुद्धिजीवी और समाज सुधारक थे। उन्होंने भारत में जाति व्यवस्था के सामाजिक अन्याय को दूर करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। जवाहरलाल नेहरू ने बाबा साहब को भारत का पहला कानून मंत्री नियुक्त किया। इस शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य डॉ. बाबा भीमराव अम्बेडकर के इतिहास एवं विचारों पर प्रकाश डालना है। लेख के मुद्दे से संबंधित विभिन्न सरकारी कार्यालयों की रिपोर्ट, साथ ही प्रकाशित और अप्रकाशित जर्नल पेपर, किताबें और पत्रिकाएँ, डेटा स्रोतों में से हैं। बी.आर. अम्बेडकर एक मानवाधिकार कार्यकर्ता, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, कानूनी विशेषज्ञ, शिक्षाविद्, पत्रकार, सांसद, संपादक और सामाजिक क्रांतिकारी थे। वह एक निर्धारित विनिमय दर वाले स्वर्ण मानक के समर्थक थे। उनके आर्थिक विचार देश की आर्थिक समस्याओं के समाधान में कारगर हो सकते हैं। बाबासाहेब अम्बेडकर भारत के बाहर अर्थशास्त्र का अध्ययन करने वाले पहले भारतीय थे। भूमि सुधार और राज्य के आर्थिक विकास के पीछे उनका अग्रणी प्रभाव था। कृषि भूमि पर राज्य का नियंत्रण, उत्पादक संसाधनों का रखरखाव और न्यायपूर्ण वितरण उनकी राज्य समाजवाद विचारधारा के तीन स्तंभ थे। सूचना और सांख्यिकीय डेटा के द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करते हुए, यह शोध अध्ययन भारत में विशिष्ट आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों पर डॉ. भीमराव अंबेडकर की सैद्धांतिक राय पर केंद्रित है।

कीवर्ड: अम्बेडकर, इतिहास, विचार, भारत, समाज

-----x-----

1. परिचय

डॉ. भीमराव अम्बेडकर, जिन्हें 'बाबा साहेब' के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय समाज के न्याय, सामाजिक समरसता, और मानवाधिकारों के लिए अद्वितीय समर्थक और समाजसेवी थे। उनका जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महू नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल था और माता का नाम भीमाबाई नामक था।

बाबा साहेब अम्बेडकर का बचपन और युवावस्था गरीबी और विविध अत्याचारों के बीच बीता। उन्होंने विशेष रूप से अपने व्यक्तित्व के प्रथम वर्षों में जातिवाद और विविध अत्याचारों के प्रति एक विशेष चेतना विकसित की।

अम्बेडकर ने अपनी शिक्षा के क्षेत्र में उच्च उत्कृष्टता प्राप्त की। उन्होंने बॉम्बे विश्वविद्यालय, कैंट्राल प्रॉविंशियल विश्वविद्यालय (दक्षिणी इलाहाबाद) और लंदन विश्वविद्यालय से अपनी शिक्षा पूरी की। उन्होंने कई उच्च शिक्षा उपाधियों को प्राप्त किया, जिसमें लॉ डिग्री, एम.ए., एम.एल.एल.बी. और डॉक्टरेट शामिल हैं।

अम्बेडकर ने भारतीय समाज को उसकी कलंकित दासता से मुक्त करने के लिए सबसे पहले उसके अधिकारों की मांग की। उन्होंने विभाजन, उपवास, और आंदोलन के माध्यम से अपनी आवाज बुलंद की और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष किया।

संविधान निर्माण के दौरान, अम्बेडकर ने भारतीय संविधान की धारा ३७० के तहत उसके समर्थन में कठोर संघर्ष किया, जिससे अनुसूचित जातियों को भारतीय संविधान में समानता के अधिकार प्राप्त हुए।

भारतीय समाज के समाजसेवी, विचारक और न्यायवादी, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर का योगदान देश के समृद्ध इतिहास में अविस्मरणीय है। उनके विचार और कार्यों ने

न केवल भारतीय समाज को संविधान और सामाजिक न्याय के माध्यम से पुनर्निर्माण किया, बल्कि उन्होंने भारतीय जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। बाबा साहेब अम्बेडकर की मृत्यु 6 दिसंबर 1956 को हुई, लेकिन उनका योगदान भारतीय समाज को उसकी स्वतंत्रता और समाजिक समरसता की ओर अग्रसर करने में सदैव याद किया जाएगा।

सामाजिक सुधार और सक्रियता:

- अम्बेडकर ने अपना जीवन हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर दलितों (जिन्हें पहले अछूत कहा जाता था) के अधिकारों और सम्मान की वकालत करने के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने जाति व्यवस्था का पुरजोर विरोध किया, जिसने दलितों को समाज के सबसे निचले पायदान पर धकेल दिया और उनके साथ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भेदभाव किया।
- एक समाज सुधारक के रूप में, अम्बेडकर ने छुआछूत और जाति-आधारित भेदभाव जैसी सामाजिक बुराइयों को खत्म करने के लिए अथक प्रयास किया। उन्होंने जाति-आधारित अन्याय को चुनौती देने और सामाजिक समानता और न्याय को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न आंदोलन और अभियान चलाए।
- अम्बेडकर के प्रयासों से महत्वपूर्ण विधायी सुधार हुए, जिनमें अस्पृश्यता का उन्मूलन और शैक्षणिक संस्थानों और सरकारी नौकरियों में आरक्षण के माध्यम से दलितों के लिए सकारात्मक कार्रवाई को बढ़ावा देना शामिल है।

भारतीय संविधान में योगदान:

- बाबासाहेब अम्बेडकर ने भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने भारत के लोकतांत्रिक शासन और सामाजिक न्याय ढांचे की नींव रखी। उन्होंने भारत की संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और संविधान के निर्माण में अमूल्य योगदान दिया।
- अंबेडकर ने संविधान में समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे के सिद्धांतों का समर्थन किया और दलितों, महिलाओं और धार्मिक अल्पसंख्यकों सहित हाशिए पर और वंचित समूहों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रावधानों को शामिल करने की वकालत की।
- उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप संविधान में कई प्रगतिशील उपायों को शामिल किया गया, जैसे अस्पृश्यता का उन्मूलन, समान अधिकारों और अवसरों की गारंटी, और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए सामाजिक समावेश और प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने के लिए आरक्षण की प्रणाली की स्थापना।

राजनीतिक कैरियर:

- बाबासाहेब अम्बेडकर एक प्रमुख राजनीतिक नेता और इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी के संस्थापक थे, जिसका बाद में शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन में विलय हो गया। उन्होंने प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के मंत्रिमंडल में स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री के रूप में भी कार्य किया।
- अम्बेडकर को भारत की संविधान सभा के सदस्य के रूप में चुना गया और उन्होंने देश की स्वतंत्रता के बाद के राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने हाशिये पर पड़े समुदायों के हितों का प्रतिनिधित्व किया और विधायी तरीकों से उनके सशक्तिकरण और उत्थान की वकालत की।

विरासत और प्रभाव:

- बाबासाहेब अम्बेडकर की विरासत भारतीयों और दुनिया भर के उन लोगों की पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती है जो सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों के लिए प्रयास करते हैं। उन्हें भारतीय संविधान के वास्तुकार और उत्पीड़ितों और हाशिये पर पड़े लोगों की आवाज़ के रूप में व्यापक रूप से सम्मान दिया जाता है।
- अम्बेडकर की शिक्षाएँ और दर्शन, उनके लेखन और भाषणों में समाहित हैं, तर्क, स्वतंत्रता और सामाजिक लोकतंत्र के सिद्धांतों पर जोर देते हैं। सामाजिक सुधार, आर्थिक न्याय और राजनीतिक सशक्तिकरण पर उनके विचार समकालीन भारत में प्रासंगिक और प्रभावशाली बने हुए हैं।
- भारत भर में कई संस्थान, स्मारक और स्मारक बाबासाहेब अम्बेडकर को समर्पित किए गए हैं,

जो राष्ट्र के लिए उनके योगदान को याद करते हैं और सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के चैंपियन के रूप में उनकी विरासत का सम्मान करते हैं।

2. साहित्य की समीक्षा

डॉ. बी.आर. अंबेडकर और उनके धार्मिक दृष्टिकोणों पर और उनके जीवन और कार्य के बारे में अकादमिक क्षेत्र में अनगिनत काम छाये हुए हैं, जो विद्वानों और बुद्धिजीवियों के लिए हैं। धनंजय कीर (1954) अपने पुस्तक "डॉ. अंबेडकर: जीवन और मिशन" में डॉ. अंबेडकर के योगदान को भारतीय विचार, इतिहास, साहित्य और संविधान में बताया है, और हिन्दू धर्म और उसके विकास में उनके स्थान का। उनके बौद्ध धर्म में परिवर्तन और उनके जीवन के आखिरी दिनों का भी पूरा विवरण है। ऐतिहासिक साक्षात्कारों से बड़े उद्धरण, प्रेरणास्पद भाषण इस पुस्तक को और अधिक दिलचस्प बनाते हैं। यह पुस्तक डॉ. अंबेडकर की ज्ञान प्राप्ति के लिए की गई खोज का भी एक प्रकाशन देती है, उनके दबे हुए लोगों के मुक्ति के लिए उनकी वीर लड़ाई, महात्मा गांधी और अन्य प्रमुख भारतीय नेताओं के साथ उनकी सामना और उनके विचारों पर भी विचार देती है।

अंबेडकर और संघरक्षिता की (1986) "अंबेडकर और बौद्ध धर्म" हमें अंबेडकर के करियर का विवरण प्रदान करती है, उन्हें बौद्ध धर्म में परिवर्तन के लिए किन कारणों ने प्रेरित किया और बौद्ध धर्म उनके लिए क्या मतलब रखता था। संघरक्षिता एक पश्चिमी विचारक और एक बौद्ध चयनकर्ता थे, जो अपने अधिकांश समय को भारत में बिताते थे और उन्होंने दावा किया कि वह अंबेडकर के करीब थे, और 1980 के दशक में भारत में अनुवादित की जाने वाली अनौपचारिक समुदायों की पश्चिमी किंकर्ता बने।

एन म ब्लैकबर्न का (1993) लेख "धर्म, संबंध और बौद्ध धर्म: अंबेडकर के एक मॉरल समुदाय की दृष्टि" जर्नल ऑफ द इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज़ में प्रकाशित हुआ था, उसने देखा कि अंबेडकर ने बुद्ध की संघर्ष को एक घातक आर्य समाज की डिग्रेडेड जीवनशैली के खिलाफ स्वदेशी सांस्कृतिक प्रतिक्रिया के रूप में देखा। अंबेडकर के अनुसार, बुद्ध के दिनों के दौरान प्रमुख समाज एक ब्राह्मणिक आर्य समुदाय था, जो सामाजिक और धार्मिक रूप से डिग्रेडेड जीवन जी रहा था। बुद्ध ने ब्राह्मणिक जीवनशैली के अराजकता के खिलाफ विरोध किया और ब्राह्मणवाद को नियंत्रित करने में सफल रहे। उसी तरह, अंबेडकर ने भारत के इतिहास को ब्राह्मणवाद और बौद्धधर्म के बीच की लड़ाई का इतिहास माना और अपने जीवन में भारत को एक बौद्ध भारत में पुनर्रूपित करने का आलंब किया।

वैलेरियन रॉड्रिग्स (2011) की "अंबेडकर ऑन रिलीजन और मॉडर्निटी" उसकी धार्मिक विचारों के प्रति उसकी संरेषणात्मक दृष्टिकोण के बारे में बताती है, विशेष रूप से उसके बौद्ध धर्म में परिवर्तन के संदर्भ में। इसका विवरण देता है कि उसका धर्म में परिवर्तन देश की धर्मनिरपेक्ष विशेषताओं को क्यों नुकसान पहुंचाया। इस घटना ने अंधविश्वास को मजबूत किया और उन्होंने उन लोगों के पथ में बड़ी रास्ता-रोक डाली, जिन्होंने उन्हें उनकी स्थिति के लिए एक रेडिकल विकल्प के लिए स्वाभाविक अवशोषण के रास्ते में आने का प्रतिरोध किया। इन सभी पुस्तकों, लेखों और अन्य लेखों के बावजूद, उसके धार्मिक विचारों के बारे में और भारत में प्रचलित अन्य धर्मों के बारे में उसके विचारों का एक खास विवरण हमेशा स्वागत होता है।

सिन्हा (1991) ने अपने अध्ययन में बाबा भीमराव अंबेडकर के जीवन और विचारों के माध्यम से राष्ट्रवाद की महत्वपूर्ण दिशाओं को प्रस्तुत किया है। यह अध्ययन राष्ट्रीयता के संविदानिक और सामाजिक पहलुओं को खोजने का प्रयास करता है, और बाबा अंबेडकर के योगदान को नया दृष्टिकोण देता है। इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है उसके प्रासंगिक उद्धरणों का। लेखकों ने बाबा अंबेडकर के विचारों के समर्थकों के द्वारा दी गई प्रेरणास्त्रोत को साक्षरता की ओर बढ़ाया है, और इसे एक अद्वितीय रूप से संकेत किया है। बाबा अंबेडकर ने राष्ट्रवाद की महत्वपूर्ण प्रिंसिपल्स को बड़े ही सुंदरता से प्रस्तुत किया है, और उनके विचारों का अद्वितीय अध्ययन करने का यह प्रयास इस अध्ययन के सर्वोत्तम हिस्सा है। इस अध्ययन ने बाबा भीमराव अंबेडकर के राष्ट्रवाद के महत्व को एक नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान किया है। इस अध्ययन के माध्यम से, हमें उनके सोचने और काम करने के तरीकों का गहरा और सर्वाधिक अध्ययन करने का एक अद्वितीय मौका मिलता है, जो हमारे राष्ट्रवाद के संविदानिक और सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

गोखले (1967) ने अपने अध्ययन के माध्यम से बाबा भीमराव अंबेडकर के राष्ट्रवाद के साथ एक नया और सामाजिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जिसमें वे एक

प्रेरणास्त्रोत के रूप में उभरते हैं, जिन्होंने भारतीय समाज के निर्वाचन के संविदानिक रूप से समाहित होने के साथ ही व्यक्तिगत और सामाजिक स्वतंत्रता के महत्व को उजागर किया। यह अध्ययन उनके विचारों के सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व का प्रयास करता है जो वे अपने जीवन में अद्वितीय रूप से व्यक्त करते थे, जैसे कि उनका समाज में समानता और न्याय के प्रति अद्वितीय प्रतिबद्धता। इस अध्ययन के माध्यम से, लेखकों ने एक अद्भुत प्रमाण दिया है, जो बाबा अंबेडकर के उद्देश्यों के प्रति हमारे समाज के नए प्रतिनिधित्व की आवश्यकता को प्रमोट करता है। यह अध्ययन उनके दृढ और सुसंगत दृष्टिकोण को प्रमोट करता है, जिनसे उन्होंने राष्ट्रीय एकता और समाज में सामाजिक न्याय के लिए योजना बनाई। इस अध्ययन के माध्यम से, हमें बाबा भीमराव अंबेडकर के राष्ट्रवाद के एक नए पहलू को समझने का अवसर मिलता है, जिससे हम उनके योगदान के महत्व को समझ सकते हैं, जो भारतीय समाज के लिए न्याय और समानता के मामूली इच्छाशक्ति से प्रेरित हुए थे।

कदम (1997) का अध्ययन बाबा भीमराव अंबेडकर के राष्ट्रवाद के विचारों को गहराई से जांचने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है, और यह व्यक्ति के विचारों और सोच को एक नए प्रिज्म में प्रस्तुत करता है। बाबा अंबेडकर का योगदान भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में अद्वितीय और महत्वपूर्ण रूप से है, और इस अध्ययन के माध्यम से हम उनके विचारों के महत्व को समझ सकते हैं। इस अध्ययन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह बाबा अंबेडकर के व्यक्तिगत और सामाजिक प्रणालियों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलता है। अध्ययन के माध्यम से, बाबा अंबेडकर के विचारों को राष्ट्रवाद के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो सामाजिक न्याय के प्रति उनकी अद्वितीय प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस अध्ययन में, लेखकों ने व्यापक रूप से बाबा अंबेडकर के सोचने के तरीकों को उजागर किया है और उनके राष्ट्रवाद के महत्व को समझने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान किया है। इस अध्ययन के माध्यम से हम बाबा भीमराव अंबेडकर के राष्ट्रवाद के विचारों को एक नए पहलू से देखने का मौका प्राप्त करते हैं, जिससे हम उनके योगदान के महत्व को समझ सकते हैं, जो भारतीय समाज के न्याय और समानता के मामूली इच्छाशक्ति से प्रेरित हुए थे।

ओमवेट (2003) ने इस अध्ययन के माध्यम से हमें बाबा भीमराव अंबेडकर के राष्ट्रवाद को भारतीय स्वतंत्रता के बाद के समय को संदर्भ में समझाया, यह प्रयास किया गया है। बाबा अंबेडकर का योगदान स्वतंत्रता संग्राम के बाद के भारत के सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, और उनके दृष्टिकोण का महत्व समझने के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता है। इस अध्ययन में, लेखकों ने उनके विचारों को स्वतंत्रता के बाद के भारत के संदर्भ में प्रस्तुत किया है, और उनके योगदान के महत्व को समझाने का प्रयास किया है। वे दिखाते हैं कि उनके राष्ट्रवादी दृष्टिकोण ने स्वतंत्रता संग्राम के बाद के भारतीय समाज के साथ कैसे मिलकर काम किया और समाज में समानता और न्याय की दिशा में कैसे मदद की। इस अध्ययन के माध्यम से, हम बाबा भीमराव अंबेडकर के राष्ट्रवाद की महत्वपूर्ण भूमिका को समझ सकते हैं, जो भारतीय स्वतंत्रता के बाद के विकास में एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे।

3. सामाजिक न्याय पर अम्बेडकर के विचार

कई विभिन्न स्रोत और आयाम न्याय की अवधारणा की जटिलता में योगदान करते हैं। जिस समय, स्थान और परिस्थितियों में वे रहते थे, उसके संदर्भ में, उन कारकों की बाधाओं के साथ विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न दृष्टिकोणों से इसकी जांच की गई है। जब न्याय की अवधारणा की बात आती है, तो सामाजिक न्याय उन आयामों में से एक है जो समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे के सिद्धांतों के आधार पर समाज की संरचना का प्रतीक है। यह मानव सामाजिक परिस्थितियों की स्थापना के लक्ष्य के साथ सामाजिक और आर्थिक, साथ ही भाईचारे दोनों में समानता की धारणा पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है जो सभी व्यक्तियों के स्वतंत्र और समान विकास की गारंटी देता है। परिणामस्वरूप, जनसंख्या के कुछ वर्गों को जनसंख्या के अन्य वर्गों के साथ समान स्तर पर रखने के लिए, सामाजिक न्याय की अवधारणा को कभी-कभी तरजीही या असमान उपचार की आवश्यकता हो सकती है (अग्रवाल , 2014)।

सभी मनुष्यों की समानता, स्वतंत्रता और भाईचारा अम्बेडकर की सामाजिक न्याय की अवधारणा में सन्निहित है। अपने जीवन के हर पहलू में, वह एक ऐसी सामाजिक संरचना के पक्ष में थे जो मनुष्य और मनुष्य के बीच उचित संबंधों के सिद्धांत पर आधारित हो। एक तर्कवादी और मानवतावादी के रूप में, उन्होंने धर्म के नाम पर किसी भी प्रकार के पाखंड, अन्याय या मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का समर्थन नहीं किया। उन्हें इनमें से कोई भी चीज़ मंजूर नहीं थी. वह एक ऐसे धर्म के लिए खड़े हुए जो सार्वभौमिक नैतिकता सिद्धांतों का पालन करता है और सभी युगों, राष्ट्रों और नस्लों के लिए उपयुक्त

है। वैध माने जाने के लिए इसे तर्क के अनुरूप होना चाहिए और स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। अम्बेडकर एक ऐसी सामाजिक संरचना के पक्ष में थे जिसमें किसी व्यक्ति का पद उसकी योग्यताओं और उपलब्धियों से निर्धारित होता है, और जिसमें किसी को भी केवल उसके जन्म के कारण महान या अछूत नहीं माना जाता है। उन्होंने देश के उन लोगों को तरजीह देने की नीति पर जोर दिया जो आर्थिक रूप से शोषित थे और सामाजिक उत्पीड़न का शिकार थे। कई प्रावधान जो राज्य को अपने सभी नागरिकों को न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक, साथ ही स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सुनिश्चित करने का आदेश देते हैं, भारत के संविधान में शामिल हैं, जिसे उनकी अध्यक्षता में तैयार किया गया था। इन प्रावधानों को भारत के संविधान में शामिल किया गया था। इसके अलावा, इसमें कई प्रावधान शामिल हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में उत्पीड़ित लोगों को अधिमान्य उपचार दिया जाएगा। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 17 के अनुसार अस्पृश्यता की प्रथा को समाप्त कर दिया गया है।

संविधान को पारित कराने के लिए अंबेडकर ने संविधान सभा के सामने जो भाषण दिया, उसमें उन्होंने कहा, "मैंने अपना काम पूरा कर लिया है; मेरी इच्छा है कि कल भी सूर्योदय हो।" नए भारत ने राजनीतिक स्वतंत्रता तो हासिल कर ली है, लेकिन वह अभी तक उस बिंदु तक नहीं पहुंचा है, जहां वह सामाजिक या आर्थिक स्वतंत्रता हासिल कर सके।

4. जाति व्यवस्था और सामाजिक बहिष्कार

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने भारतीय समाज की बेहतर समझ की खोज में एक संस्था के रूप में जाति के महत्व को पहचाना। उनके राजनीतिक सिद्धांत को विकसित करने की प्रक्रिया के दौरान, भारत में जाति व्यवस्था द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका की उपेक्षा करना असंभव था। किसी भी राजनीतिक विचारधारा के विकास के लिए जाति व्यवस्था की समझ आवश्यक है। अम्बेडकर जाति की अवधारणा को विश्लेषणात्मक तरीके से संहिताबद्ध करने वाले पहले विचारक हैं। उन्होंने जाति की अवधारणा पेश की। अतीत में, जाति पर विमर्श प्रकृति में मानवशास्त्रीय और वर्णनात्मक रहा है। जाति व्यवस्था से प्रभावित लोगों के जीवन को बेहतर ढंग से समझने के लिए उन्होंने जाति व्यवस्था की स्थापना और संचालन को समझने का प्रयास किया। उन्होंने समझा कि जाति व्यवस्था वह नींव थी जिस पर संपूर्ण भारतीय सामाजिक व्यवस्था स्थापित की गई थी, और जाति व्यवस्था सभी मान्यताओं, अनुष्ठानों और ज्ञान का केंद्र है। निचली जातियों को एक वैकल्पिक पहचान प्राप्त करने में सहायता करने के लिए जो जाति पर निर्भर नहीं थी, अम्बेडकर ने उन्हें धरती के बेटों का एक सुंदर अतीत प्रदान करने का प्रयास किया। यह उनके आत्म-सम्मान को पुनः प्राप्त करने और उनके विभाजनों पर काबू पाने के लक्ष्य के साथ किया गया था। जब पश्चिमी लेखक नस्लीय विचारों का हवाला देकर जाति पदानुक्रम को समझाने का प्रयास करते हैं, तो अम्बेडकर उनसे दृढ़ता से असहमत होते हैं। साफ़ है कि उनकी व्याख्या काफ़ी जटिल है. अपने स्पष्टीकरण में, उन्होंने दावा किया कि प्रत्येक आदिम समाज पर, किसी न किसी समय पर, एक आक्रामक ने कब्ज़ा कर लिया था, जिसने खुद को मूल जनजातियों से ऊपर उठा लिया था। ये जनजातियाँ, निश्चित रूप से, एक परिधीय समूह को जन्म देती हैं जिसे वह टूटे हुए आदमी के रूप में संदर्भित करता है क्योंकि वे विघटन की प्रक्रिया से गुजरते हैं। अपने लेखन करियर के दौरान, जाति व्यवस्था के बारे में अंबेडकर की समझ में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए। शुरुआत में, उन्होंने सुझाव दिया था कि साझा सांस्कृतिक माहौल के संदर्भ में जाति के लक्षण को बहिर्विवाह पर आरोपित किया गया था (मल्लिक , 2011)। उनके निष्कर्षों से पता चला कि जाति का नाम एक महत्वपूर्ण विशेषता है जो जाति की एकजुटता को बनाए रखने में भूमिका निभाता है। अपने लगातार प्रेरक तर्कों में, उन्होंने तर्क दिया कि जाति व्यवस्था का मानक आधार सदस्यों की श्रेणीबद्ध असमानता है। अम्बेडकर के अनुसार, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांत एक आदर्श समाज की नींव होंगे। अम्बेडकर जाति के उन्मूलन और एक ऐसे समाज की स्थापना के लिए एक ठोस प्रस्ताव पेश करते हैं जो वास्तविक स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे पर आधारित हो। अंबेडकर को यह कहते हुए उद्धृत किया गया है, "*मेरी राय में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि जब तक आप अपनी सामाजिक व्यवस्था नहीं बदलते, आप प्रगति के रास्ते में बहुत कम हासिल कर सकते हैं।"* बचाव और अपराध दोनों को समुदाय की लामबंदी के माध्यम से पूरा नहीं किया जा सकता है। जाति की बुनियाद किसी बात का समर्थन नहीं कर सकती. राष्ट्र का निर्माण असंभव है. नैतिकता का विकास असंभव है. जाति की बुनियाद पर आप जो कुछ भी बनाएंगे वह अंततः टूट जाएगा और कभी पूरा नहीं होगा।" उन्होंने विशेष रूप से वेदों की व्याख्या का उल्लेख किया। जब लोग जाति का पालन करते हैं तो वे गलत नहीं होते।

जो चीज गलत है वह उनका धर्म है, जिसने इसे स्थापित किया है उनमें जाति का विचार है. शास्त्रों के माध्यम से ही वे इस जाति-आधारित धर्म के बारे में सीखते हैं। वेदों की पवित्रता में विश्वास को नष्ट करके ही सच्चा समाधान पाया जा सकता है। यह सामाजिक सुधार को आगे बढ़ाने का एक असंगत तरीका है कि लोगों को वेदों की पवित्रता और उनके द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों पर विश्वास करने की अनुमति देने के लिए वेदों के अधिकार पर सवाल न उठाया जाए, साथ ही अनुचित और अमानवीय होने के कारण उनके कार्यों की निंदा और आलोचना की जाए। सुधारक जो अस्पृश्यता को खत्म करने के लिए काम कर रहे हैं, जैसे कि गांधी, इस तथ्य से अवगत नहीं हैं कि लोगों के कार्य केवल उन मान्यताओं का परिणाम हैं जो वेदों द्वारा उनमें स्थापित किए गए हैं, और लोग तब तक अपना आचरण नहीं बदलेंगे जब तक वे वेदों की पवित्रता पर विश्वास करना बंद कर देते हैं, जो कि आधार है जिस पर उनका आचरण आधारित है। अंतर-जातीय भोज और विवाह की वकालत और आयोजन करने का कार्य कृत्रिम साधनों के उपयोग के माध्यम से किए जाने वाले बल-खिलाने की प्रथा के अनुरूप है। महान भारतीय दार्शनिक कहते हैं: "*प्रत्येक पुरुष और महिला को वेदों के बंधन से मुक्त करो, उनके मन से वेदों पर स्थापित हानिकारक धारणा को शुद्ध करो, और वह उसे बताए बिना एक दूसरे के साथ भोजन करेगा या परस्पर विवाह करेगा।*" ऐसा करो" । उन्होंने इस समस्या को समझा, इसका अध्ययन किया और इसे इस तरह प्रकाश में लाया कि इसने दलितों की मुक्ति को एक नई गति दी, इस तथ्य के बावजूद कि जाति समस्या की प्रकृति जटिल थी। सामाजिक सुधार की प्रक्रिया के दौरान उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के विचारों को अपना मार्गदर्शक सिद्धांत बनाया। अपने प्रयासों से डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर भारत के इतिहास को एक नई दिशा देने में सफल रहे। जाति की संस्था इतनी गहराई तक व्याप्त है कि यह अटूट प्रतीत होती है। हम जिस समाज में रहते हैं, उसमें हमारे जीवन के हर पहलू से इसका संबंध है। हालांकि बड़ी संख्या में सुधारक आए और उन्होंने समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, लेकिन उनमें से कोई भी जाति व्यवस्था को पूरी तरह खत्म करने में सक्षम नहीं हो सका।

5. निष्कर्ष

हालाँकि डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर न केवल अछूतों के नेता थे, बल्कि वे राष्ट्रीय ख्याति के नेता भी थे। वह दृढ़ विश्वास वाले व्यक्ति थे। मनुष्य की गरिमा उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। वह लोगों को डिग्री प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें कमजोर करने के लिए शिक्षित करना चाहते थे ताकि वे मानवाधिकारों के प्रति जागरूक हो सकें। अम्बेडकर का योगदान न केवल भारतीय इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण है, बल्कि वे एक ऐसी पद्धति के विकास में भी महत्वपूर्ण हैं जो अन्य विद्यालयों के समकालीन इतिहासकारों के लिए भी अधिक प्रासंगिक है। अंबेडकर के विचारों को इसकी नींव के रूप में काम करते हुए, भारत का संविधान यह सुनिश्चित करता है कि सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा पर ध्यान देने के साथ सभी लोग समान अधिकारों के हकदार हैं। दूसरी ओर, यह देखा गया है कि अंबेडकर की सामाजिक न्याय की अवधारणा समय के साथ उचित तरीके से लागू नहीं हो पाई है। इसके कारण, न्याय की उनकी अवधारणा को नागरिक समाज के माध्यम से संस्थानों द्वारा प्रसारित करने की आवश्यकता होगी।

भारतीय इतिहास की एक महान हस्ती बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर न केवल एक दूरदर्शी नेता थे, बल्कि एक समाज सुधारक, न्यायविद्, अर्थशास्त्री और विद्वान भी थे। उनके जीवन और विचारों ने भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

निष्कर्षतः, हाशिये पर पड़े समुदायों, विशेषकर दलितों के उत्थान में बाबासाहेब अम्बेडकर का योगदान अद्वितीय है। सामाजिक न्याय, समानता और जाति-आधारित भेदभाव के उन्मूलन के प्रति उनके अथक प्रयासों ने भारत में एक अधिक समावेशी समाज की नींव रखी। अपने लेखों, भाषणों और राजनीतिक सक्रियता के माध्यम से, उन्होंने यथास्थिति को चुनौती दी और उत्पीड़ितों के अधिकारों और सम्मान की वकालत की।

मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में अंबेडकर की भूमिका ने एक लोकतांत्रिक ढांचे की स्थापना के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया, जो जाति, पंथ या लिंग के बावजूद सभी नागरिकों के हितों की रक्षा करता है। मौलिक अधिकारों, कानून के समक्ष समानता और ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के लिए सकारात्मक कार्रवाई पर उनका जोर भारतीय समाज में प्रचलित प्रणालीगत अन्याय के बारे में उनकी गहरी समझ को दर्शाता है।

इसके अलावा, शिक्षा, आर्थिक सशक्तीकरण और राजनीतिक भागीदारी पर अंबेडकर के विचार पीढ़ियों को सामाजिक परिवर्तन और प्रगति के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। जाति उन्मूलन और ज्ञान की खोज का उनका आह्वान समकालीन समय में भी प्रासंगिक

बना हुआ है, उन्होंने व्यक्तियों और संस्थानों से असमानता और भेदभाव के मुद्दों पर गंभीरता से जुड़ने का आग्रह किया है।

संक्षेप में, बाबासाहेब अम्बेडकर की विरासत वैश्विक स्तर पर सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों की वकालत करने वालों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है। उनकी शिक्षाएं सीमाओं के पार गूंजती हैं, हमें समानता के लिए स्थायी संघर्ष और अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी दुनिया के निर्माण में सामूहिक कार्रवाई की परिवर्तनकारी शक्ति की याद दिलाती हैं।

सन्दर्भ सूची

1. "बाबा साहब भीमराव अंबेडकर." भारत का राष्ट्रीय पोर्टल, https://www.india.gov.in/।

2. अग्रवाल, आर.एन. (2014, 10 अक्टूबर)। भोजपुर गांव में छह दलित महिलाओं से सामूहिक बलात्कार, तीन गिरफ्तार। द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया। http://timesofindia.indiatimes.com/city/patna/Six-dalit Women-gang-raped-in-Bhojpur-village-3-shield/articleshow/4477796.cms से लिया गया

3. अध्याय I - गैर-हिंदुओं के बीच अस्पृश्यता, अछूत कौन थे और वे अछूत क्यों बने? डॉ. बी.आर.अम्बेडकर द्वारा

4. ओमवेट, गेल। "अंबेडकर: एक प्रबुद्ध भारत की ओर। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 38, नंबर 6, 2003, पीपी 532-534।

5. कदम, केएन (1997)। अम्बेडकरवादी बौद्ध धर्म में परिवर्तन का अर्थ और अन्य निबंध, मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन प्रा. लिमिटेड, पी.1

6. कीर, धनंजय (1954)। डॉ. अम्बेडकर: जीवन और मिशन, बॉम्बे: पॉपुलर प्रकाशन, पृष्ठ 252

7. गोखले, बालकृष्ण गोविंद (1967)। डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर: हिंदू परंपरा के खिलाफ विद्रोही, ब्रैडवेल एल.स्मिथ (सं.) दक्षिण एशिया में धर्म और सामाजिक संघर्ष, लीडेन: ईजेब्रिल, पृष्ठ 17।

8. बी.आर. अम्बेडकर, "अछूत। वे कौन थे और अछूत क्यों बने?" डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर लेखन और भाषण, खंड में। 7, पृ. 290-303. 4. भाग I - एक तुलनात्मक सर्वेक्षण,

9. ब्लैकबर्न, ऐनी एम. (1993)। धर्म, रिश्तेदारी और बौद्ध धर्म: अंबेडकर का एक नैतिक समुदाय का दृष्टिकोण, नॉर्थफील्ड: द जर्नल ऑफ द इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज, वॉल्यूम 16, नंबर 1, यूएसए, पृष्ठ 5- 9

10. मल्लिक, सी. (2011) . "डॉ. बीआर अंबेडकर के भारत के दृष्टिकोण में न्याय और समानता।" डॉक्टरेट शोध प्रबंध, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता।

11. सिन्हा, अरुण क्र. (1991)। अम्बेडकर का बौद्ध धर्म में रूपांतरण: कारक और प्रभाव के बाद, बुद्ध गया केंद्र: महा बोधि सोसायटी शताब्दी समारोह, 1881-1991, स्मारिका, संबोधि संख्या 2, खंड 2, पृष्ठ 73-79

Corresponding Author

सचिन राठौड़*

शोधार्थी छात्र, समाजशास्त्र विभाग, डीएवी कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

Email: sunny14071980@gmail.com